क्या पढ़ने में चूक को ग़लतियाँ कहना जायज़ है?

भारती पंडित

यह लेख, पढ़ना क्या है और पढ़ने की प्रक्रिया कैसी होती है इसपर अपने विचार प्रस्तुत करता है। कक्षा चार के बच्चों के साथ पढ़ने को लेकर किए गए काम के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए लेखिका चर्चा करती हैं कि 'पढ़ने में चूक' को ग़लतियाँ नहीं कह सकते। इस सन्दर्भ में वे विभिन्न शिक्षाविदों व शोधकर्ताओं द्वारा किए गए काम का हवाला भी देती हैं कि ये ग़लतियाँ नहीं बल्कि बच्चों द्वारा उपयोग किए गए अपसंकेत हैं, जो उनके पास उपलब्ध पूर्वज्ञान पर आधारित होते हैं। सं.

पढ़ना क्या है– इसके बारे में एक आम मान्यता है कि पढ़ना एक सरल और सुस्पष्ट प्रक्रिया है, जिसमें अक्षरों, शब्दों, वर्तनी संरचना और भाषा की बड़ी इकाईयों का कुछ विस्तृत, अनुक्रमिक ज्ञान और पहचान शामिल है। पढ़ना सिखाने के लिए कई पद्धतियाँ व्यवहार में लाई जाती रही हैं। पढ़ने की वर्णमाला पद्धति या फॉनिक पद्धति में अक्षरों की पहचान करना प्रमुख होता है। इसी तरह शब्द केन्द्रित पद्धतियों में शब्दों की पहचान पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। किन्हीं शब्दों को बार-बार देखने और उनके अर्थ को समझने से उन्हें किसी भी सन्दर्भ में प्रयोग किए जाने पर भी पहचाना जा सकता है।

स्पाशे (1964) ने पढ़ने के प्रति इस सामान्य समझ को प्रस्तुत करते हुए कहा है, "पढ़ना, यानी शब्दों की श्रृंखलाओं की पहचान करना है।"

इसी तरह, लिपिनकॅट और वॉलकॅट अक्षर प्रति अक्षर पढ़ने की प्रक्रिया का समर्थन करते हुए कहते हैं, "अक्षर-शब्दों की पहचान करने की प्रक्रियाओं को अपनाते हुए आरम्भ से ही बच्चा शब्दों को उसी तरह से देखना सीख जाता है, जैसे कोई कुशल पाठक एक शब्द को सभी अक्षरों के साथ सम्पूर्णता में पढ़ता है।"

वास्तव में पढ़ने के बारे में प्रचलित पारम्परिक समझ के अनुसार पढ़ने को अब तक सरल रेखीय एकल कौशल के रूप में ही परिभाषित किया जाता रहा है। इसके पीछे का आधार वह सोच है जिसके अनुसार ज्ञान कहीं बाहर ही निहित है, जिसे हासिल किया जाना है। इसे पढ़ने के सन्दर्भ में देखा जाए तो यह माना जाता रहा है कि लिखित सामग्री का समस्त अर्थ पाठ्य में ही निहित है, और इसे समझने के लिए पाठक को पाठ्य को ठीक से पढ़ना होगा; अर्थात लेखक ने अपने विचारों को एक पाठ्य में बुन डाला है और अब पाठक को उस अर्थ को डीकोड करना है या खोलना है। सामान्य शब्दों में कहा जाए तो पढ़ने को एक सरल रेखीय (लीनियर) प्रक्रिया समझा जाता रहा है, जिसके अन्तर्गत पाठक पहले लिखे गए शब्दों के सही हिज्जे करके उनका सही उच्चारण (डीकोडिंग) करता है और उसकी सहायता से अर्थ समझता है। पढ़ने की प्रक्रिया में शब्दों के हिज्जों को समझना और सही उच्चारण कर पाना बहुत आवश्यक है और यह सब करने के लिए पाठक

को सबसे पहले अक्षरों/शब्दों की पहचान करना व उन्हें उच्चरित कर पाना आना चाहिए। शब्दों के अर्थ से उपवाक्य व वाक्यों के अर्थ बनते हैं और वाक्यों के अर्थों को जोड़कर पूरे संवाद का अर्थ समझ में आ जाता है।

मगर सही अर्थों में पढ़ना केवल यहीं तक सीमित नहीं है। ऐसे पाठक जो पढ़ने में कुछ हद तक निपुणता प्राप्त कर चुके होते हैं, उनके लिए पढ़ने की प्रक्रिया में अक्षर, शब्दों आदि की पहचान तो प्रक्रिया का बहुत ही छोटा सा अंश होता है। वास्तव में, पढ़ने की प्रक्रिया में पाठक के समक्ष प्रस्तुत पाठ्य और उसके विचारों में सतत अन्तः क्रिया चलती रहती है जिसमें पाठ्य की वाक्य संरचना की समझ और अर्थ निर्माण की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। यह एक चयनात्मक प्रक्रिया है, जिसमें पाठक किसी लिखित सामग्री को पढ़ते समय लगातार अनुमान लगाता चलता है और इसके अनुरूप अपनी अपेक्षाओं के आधार पर प्रत्यक्ष सामग्री में से बहुत थोड़े भाषाई संकेत चुनता है। पढ़ने की प्रक्रिया में जैसे-जैसे जानकारी का दायरा विस्तृत होता जाता है, पाठक पाठ्य के बारे में कई ऐसे अस्थाई निर्णय लेता जाता है जिन्हें वह प्रमाणित करता है, नकारता है या बदलता रहता है– अर्थात पढ़ने की समस्त प्रक्रिया के दौरान पाठक आगे आने वाले शब्दों, वाक्यों का अनुमान लगाता चलता है जो कभी सही साबित होते हैं, कभी ग़लत भी। इस सारी प्रक्रिया में वह अपनी अल्पकालिक और दीर्घकालिक स्मृति को टटोलता जाता है।

> वास्तव में, पढ़ने की प्रक्रिया में पाठक के समक्ष प्रस्तुत पाठ्य और उसके विचारों में सतत अन्तः क्रिया चलती रहती है जिसमें पाठ्य की वाक्य संरचना की समझ और अर्थ निर्माण की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। यह एक चयनात्मक प्रक्रिया है, जिसमें पाठक किसी लिखित सामग्री को पढ़ते समय लगातार अनुमान लगाता चलता है।

उदाहरण के लिए चौथी कक्षा के बच्चे असीम को एक कहानी दी गई, जिसे उसने पहले कभी नहीं पढ़ा था–

"जल्दी जाओ, इस मदद को वहाँ जल्द से जल्द पहुँचाना होगा तुम्हें। उसके कानों में उस अजनबी के शब्द गूँज रहे थे और वह तेज़-तेज़ क़दम बढ़ाता हुआ चला जा रहा था। मारे उत्तेजना के उसके हाथ-पाँव थर-थर काँप रहे थे...कौन होगा वह अजनबी?"

उसे इस कहानी को एक बार मन में पढ़ने और दूसरी बार मुखर वाचन के लिए दिया गया। उसने इस कहानी को इस तरह से पढ़ा–

"जल्दी जाओ, इस मदद को जल्दी ही वहाँ पहुँचाना होगा तुम्हें। उसके दिमाग़ में उस अजनबी के शब्द गूँज रहे थे और वह तेज़ क़दमों से भागता हुआ चला जा रहा था। मारे उत्तेजना के उसके हाथ-पाँव थरथरा रहे थे। कौन होगा वो आदमी?"

ज़ाहिर है कि सामान्यतः इस तरह से पढ़ने को हम उसके द्वारा पढ़ने में की गई ग़लतियों के रूप में देखेंगे और शिक्षक ऐसा मानेंगे कि असीम को या तो पाठ में लिखे कुछ शब्द मालूम नहीं हैं या वह पढ़ते समय लापरवाही बरत रहा है। जैसे, यदि पहली बार उसने 'अजनबी' शब्द को सही पढ़ा और दूसरी बार उसी के स्थान पर 'आदमी' पढ़ा, तो शिक्षक उसे कहेंगे कि 'पढ़ते समय अधिक ध्यान दें'– मगर वास्तव में यह ग़लतियाँ न होकर बच्चे द्वारा उपयोग किए गए अपसंकेत या miscue हैं, जो कि पढ़ने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग हैं। ये अपसंकेत ही बताते हैं कि बच्चा पढ़ते समय कुछ शब्दों का अनुमान लगा रहा है, अर्थात वह उस लिखित सामग्री के अर्थ को समझते हुए आगे क्या होगा यह तय करता जा रहा है।

यदि हम अपनी पढ़ने की प्रक्रिया पर ग़ौर करें (जैसे, अख़बार में कोई ख़बर पढ़ना या किसी

पत्रिका में कोई आलेख पढ़ना) तो हम इसी तरह आने वाले शब्दों का अनुमान लगाते चलते हैं और अर्थ निर्माण करते चलते हैं। (अनुमान लगाने की इस प्रक्रिया में उस भाषा की वाक्य संरचना की समझ हमारी सहायता करती है, जिसके चलते कई बार तो हम ग़लत लिखे गए शब्द को भी अनुमान के आधार पर सही पढ़ डालते हैं।) यदि अर्थ निर्माण में हमारे अनुमान की वजह से कोई व्यवधान आता है तो हम उस पंक्ति या शब्द को दुबारा पढ़कर अपने अनुमान को सही करते हैं, या आगे आने वाले शब्द संकेतों का आधार लेते हुए अनुमान को प्रमाणित करने का प्रयास करते हैं।

यदि ऊपर दिए गए उदाहरण को ध्यान से देखा जाए तो हम समझ सकते हैं कि किस तरह बच्चे पढ़ते समय अपसंकेतों का उपयोग करते हैं। जब बच्चे ने 'अजनबी' के स्थान पर 'आदमी' पढ़ा, तो पहली बार में यह लगना स्वाभाविक है कि इन दोनों शब्दों की बनावट में तो कोई समानता नहीं है। मगर ध्यान से देखा जाए तो दोनों के बीच ग़ैर-ग्राफ़िक समानता है और वह यह कि दोनों ही संज्ञा सूचक शब्द हैं। या तो बच्चे ने इन शब्दों का पहले ही अनुमान लगा लिया होगा, या उसने लिखित रूपाकार को अनदेखा करते हुए अर्थ पर ध्यान केन्द्रित किया होगा चूँकि इसके प्रयोग से अर्थ निर्माण में किसी तरह का व्यवधान नहीं आ रहा है। इसी तरह से अगले वाक्य में जब उसने 'तेज़-तेज़ क़दम बढ़ाता' के स्थान पर 'तेज़ क़दमों से भागता' पढ़ा, तो यहाँ उसने क्रिया सूचक शब्दों में बदलाव किए। चूँकि अर्थ में व्यवधान नहीं था, अतः उन शब्दों को अस्वीकार करने या सुधारने की आवश्यकता उसे महसूस नहीं हुई।

बच्चा पढ़ते समय किसी अस्थाई निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए संज्ञा और क्रिया सूचक शब्दों का प्रयोग अपसंकेतों के रूप में करता है, मगर वह जो भी पढ़ रहा है उसके अर्थ पर इन अपसंकेतों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसी तरह यदि बार-बार इन शब्दों को ठीक से पहचान कर पढ़ने पर ज़ोर दिया जाए तो भी बच्चे के पढ़ने की प्रक्रिया में उल्लेखनीय सुधार नहीं होगा।

इसका निष्कर्ष यही है कि यह बच्चा पढ़ते समय किसी अस्थाई निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए संज्ञा और क्रिया सूचक शब्दों का प्रयोग अपसंकेतों के रूप में करता है, मगर वह जो भी पढ़ रहा है उसके अर्थ पर इन अपसंकेतों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसी तरह यदि बार-बार इन शब्दों को ठीक से पहचान कर पढ़ने पर ज़ोर दिया जाए तो भी बच्चे के पढ़ने की प्रक्रिया में उल्लेखनीय सुधार नहीं होगा। हाँ, हो सकता है कि इससे उसके अर्थ निर्माण की प्रक्रिया बाधित हो और वह केवल ग्राफ़िक सूचनाओं पर ही ध्यान देता रह जाए, यानी हर शब्द को सही पढ़ने के दबाव के चलते अर्थ समझ ही न सके।

आइए, अब एक ऐसा उदाहरण देखते हैं जहाँ बच्चा अपरिचित शब्दों पर काम कर रहा है। उसे नीचे दिए गए वाक्य पढ़ने हैं, और इन्हें पढ़ने के दौरान प्रयोग किए गए अपसंकेतों में वह अपनी रणनीतियों और योग्यताओं की एक स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करता है। वह यहाँ दिखाता है कि वह जब चाहे अक्षर-ध्वनि संयोजनों का उपयोग कर सकता है–

"मनुष्य और समाज आपस में जुड़े होते हैं। मनुष्य समाज का अभिन्न अंग है और इस समाज में कार्य-व्यवहार करने के लिए उसे समाज के साथ सामंजस्य निर्माण करते हुए चलना होता है।"

बच्चे द्वारा पढ़ा गया वाक्य

"मनुष्य और समाज आपस में जुड़े हैं। मनुष्य इस समाज का अनभिज्ञ अंग है और इसमें क्रिया-व्यवहार करने के लिए उसे समाज के साथ सामाजिक निर्माण करते हुए चलना होता है।"

यहाँ बच्चे के लिए 'अभिन्न' शब्द पहले पढ़ा

हुआ नहीं था, अतः उसने ध्वनि-अक्षर संयोजन के आधार पर इसे अनभिज्ञ पढ़ा। इसी तरह 'सामंजस्य' को इसी संयोजन के आधार पर उसने सामाजिक पढ़ा चूँकि बात समाज की चल रही थी। मगर आगे पढ़ने पर जैसे ही वाक्य रचना ('सामाजिक निर्माण करते हुए...') और अर्थ में व्यवधान आया, वह रुका और उसने उन्हीं शब्दों को दोबारा पढ़कर समझने का प्रयास किया।

ज़रा सोचिए– यदि पढ़ना यानी अर्थ ग्रहण करना है तो क्या ये बच्चे वास्तव में पढ़ने की प्रक्रिया का अनुसरण नहीं कर रहे हैं?

आइए, अब बात करते हैं कि अनुमान लगाना कब सम्भव है। अनुमान तभी लगाया जा सकता है जब हम पढ़ते समय, पढ़े गए का अर्थ भी समझते हुए चल रहे हों और आगे क्या आने वाला है इसका ख़ाका अपने दिमाग़ में बनाते हुए चल रहे हों। अर्थ समझने के लिए कही जा रही बात के बारे में पूर्व ज्ञान होना भी आवश्यक है। जैसे नदी या समुद्र के क़रीब रहने वाले बच्चों के लिए ज्वार, भाटा, नाव, मछुआरे, जाल आदि शब्द बहुत ही सामान्य होंगे, जिनकी अवधारणाएँ उनके दिमाग़ में एकदम स्पष्ट होंगी। ऐसे में, इस तरह की किसी भी सामग्री को पढ़ते ही उनका पूर्व ज्ञान सक्रिय हो जाएगा और वे आगे आने वाले शब्दों या क्या होने वाला है इसका अनुमान आसानी से लगा पाएँगे। इसके विपरीत रेतीले मैदानी क्षेत्र में रहने वाले बच्चों के लिए, जो नदी तट की दुनिया से बिलकुल अनभिज्ञ हों, इस तरह की सामग्री के बारे में कोई भी अनुमान लगाना सम्भव नहीं होगा। हम बड़ों के साथ भी ऐसा कई बार होता है जब किसी ख़बर को हम ज्यों का त्यों पढ़ तो जाते हैं (जैसे ग्रीस की राजनीतिक उथल-पुथल या सीरिया की घटना), मगर उसके बारे में किसी अतिरिक्त जानकारी के न होने, अर्थात उसका सन्दर्भ पता न होने से हम बात को न तो पूरी तरह से समझ पाते हैं, न ही किसी तरह का कोई अनुमान लगा पाते हैं। अतः, यदि बच्चों को पढ़ने की प्रक्रिया में प्रवीण बनाना है तो उन्हें किसी सामग्री को शब्दशः पढ़ने के लिए न कहकर अपसंकेतों के द्वारा अनुमान लगाते हुए पढ़ने के अवसर दिए जाने चाहिए, साथ ही उस विषय विशेष के बारे में उनके शब्द भण्डार व जानकारी को बातचीत के माध्यम से इतना समृद्ध किया जाना चाहिए कि उनके लिए पढ़ने की यह प्रक्रिया सचमुच मज़ेदार हो जाए।

इसके लिए शिक्षकों को क्या करना होगा ?

- सबसे पहले तो शिक्षकों को यह समझना होगा कि पढ़ना शब्दशः अक्षरों/शब्दों को पहचानना नहीं है वरन पढ़ना अर्थ ग्रहण की वृहद प्रक्रिया है, जिसमें अनुमान लगाकर अर्थ तक पहुँचना शामिल है।

- शुरुआती पाठकों के लिए भी ऐसे अवसर उपलब्ध करवाने होंगे जहाँ बच्चे अनुमान लगाकर पढ़ सकें। इसके लिए ध्यान रखना होगा कि उन्हें दी जाने वाली पठन सामग्री अर्थपूर्ण हो, उसकी भाषा सुगठित हो और उनके सन्दर्भ से जुड़ने वाली हो।

- शिक्षकों को यह भी समझना होगा कि अनुमान लगाकर पढ़ने के लिए उस विषय के बारे में पूर्व ज्ञान होना आवश्यक है और इस पूर्व ज्ञान को समृद्ध करने के लिए कक्षा में बातचीत के अवसर दिए जाने चाहिए। साथ ही प्रारम्भिक कक्षाओं में बच्चों की पसन्द की पुस्तकें दी जानी चाहिए ताकि उनके लिए अर्थ निर्माण की प्रक्रिया सहज बन सके।

- हो सकता है, बच्चे द्वारा प्रयोग में लाए गए सभी अपसंकेत वास्तव में अपसंकेत न होकर पढ़ने में आ रही किसी परेशानी को इंगित कर रहे हों। ऐसे में शिक्षकों को बच्चों द्वारा प्रयोग किए जा रहे अपसंकेतों को समझना होगा, उनका विश्लेषण करना होगा कि वे वास्तव में बच्चे द्वारा पढ़ने की प्रक्रिया में आगे बढ़ने के संकेत हैं या उसके साथ

आ रही किन्हीं दिक़्क़तों को दिखाते हैं। यह दिक़्क़तें पूर्व ज्ञान में कमी की, ध्वनि–अक्षर–शब्दों के सम्बन्ध में समझ की कमी, वाक्य संरचना की समझ की कमी आदि की हो सकती हैं, जिन पर शिक्षक को काम करना होगा।

टिप्पणी : 'मिसक्यू एनालिसिस' (अपसंकेतों/चूकों का विश्लेषण) का विचार केनेथ गुडमैन द्वारा दिया गया है। इसके पीछे मूल धारणा यह है कि पढ़ते समय पाठक द्वारा की जाने वाली चूकें न तो संयोगवश होती हैं और न ही बेतरतीब (रैण्डम), बल्कि यह पाठक की भाषा और व्यक्तिगत अनुभवों से मिले संकेतों पर आधारित होती हैं।

सन्दर्भ

गुडमैन, कैनेथ एस, *रीडिंग इज़ अ साइको लिंग्विस्टिक गैसिंग गेम*

सिन्हा, शोभा, *शुरुआती पढ़ाई का एक वैकल्पिक रास्ता*

भारती पंडित दो दशक से स्कूली शिक्षा में अध्यापन करती रही हैं। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन भोपाल (मध्यप्रदेश) में कार्यरत हैं।
सम्पर्क : bharti.pandit@azimpremjifoundation.org